No. of Printed Pages : 6

MSK-001

स्नातकोत्तर कला उपाधि (संस्कृत)

(एम. एस. के.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2023

एम.एस.के.-001 : संस्कृत साहित्यशास्त्र एवं साहित्य

समय : 3 घण्टे | *अधिकतम अंक : 100*

निर्देश : *सभी खण्ड अनिवार्य हैं। खण्डों में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड—क

निर्देश : *अधोलिखित प्रश्नों में से किसी* **एक** *की विस्तृत व्याख्या कीजिए।* 20

1. अस्य ग्रन्थस्य काव्याङ्गतया काव्यफलैरेव फलवत्त्वमिति काव्यफलान्याह—

   चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।

   काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते॥

चतुर्वर्गफलप्राप्तिर्हि काव्यतो "रामादिवत्प्रवर्तितव्यं न रावणादिवत्" इत्यादि कृत्याकृत्यप्रवृत्तिनिवृत्युपदेशद्वारेण सुप्रतीतैव। उक्तं च (भामहेन)-

धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।

करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबन्धनम्॥ इति

अथवा

तत्किं स्वरूपं तावत्काव्यमित्यपेक्षायां कश्चिदाह–"तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनःक्वापि" इति।

तथापि-यदि दोषरहितस्यैव काव्यत्वाङ्गीकारस्तरा-

"न्यक्कारो ह्ययमेव मे यदारयस्तत्राऽप्यसौ तापसः

सोऽप्यत्रैव निहन्ति राक्षसकुलं जीवत्यहो रावणः।

धिग्धिक्छक्रजितं प्रबोधितवता किं कुम्भकर्णेन वा

स्वर्गग्रामवाटिका विलुण्ठनवृथोच्छूनैः किमेभिर्भुजैः॥

अस्य श्लोकस्य विधेयाविमर्श दोषदुष्टतया काव्यत्वं न स्यात। प्रत्युत धवनित्वेनोत्तमकाव्यताऽस्याङ्गीकृता, तस्मादव्याप्तिर्लक्षण दोषः।

2. अधोलिखित श्लोकों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 10×2=20

(क) वेणी भूतप्रतनुसलिता तामतीतस्य सिन्धुः
पाण्डुच्छाया तटरुहत रुभृंशिभिर्जीर्ण पपौः।
सौभाग्यं ते सुभग ! विरहावस्थया व्यञ्जयंती
कार्श्यं येन व्यजति विधिना स त्वयैवोपपाद्यः॥

(ख) पत्रश्यामा दिनकरह्यस्पर्धिनो यत्र वाहाः
शैलोद ग्रास्त्वमिव करिगो वृष्टिमन्तः प्रभेदात्।
योधाग्रण्यः प्रतिदशमुखं संयुगे तस्थिवासंऽ–
प्रत्यादिष्यभरणरुचयश्र्यन्द्रहासव्रणाङ्के:॥

(ग) जाने सख्यास्तव मयि मनः संभृतस्नेहमस्मा
दित्यं भूतां प्रथमविरहे तामहं तर्कयामि।
वाचालं मां न खलु सुभगं मन्याभावः करोति
प्रत्यक्षं ते निखिलमचिराद् भ्रातरुक्तं मया यत्॥

(घ) आसीनानां सुरभितशिलं नाभिगन्धैर्मृगाणां
तस्या एव प्रथवमचलं प्राप्य गौरं तुषारैः।
वक्ष्यस्य ध्वश्रमविनयने तस्यशृङ्गे निषण्णः
शोभा शुभ्रत्रिनयन वृषोत्खातपङ्कोपमेयाम्॥

3. अधोलिखित में से किन्हीं **दो** का हिन्दी भाषा में अनुवाद कीजिए– $10 \times 2 = 20$

(क) पातु वो नीलकण्ठस्य कण्ठः श्योमाम्बुदो पमः।
गौरीभुजलता यत्र विद्युल्लेखेव राजते॥

(ख) यः आत्मबलं ज्ञात्वा भारं तुलितं वहति मनुष्यः।
तस्य स्वखलनं न जायते न च कान्तारगतो विद्यते॥

(ग) यदि तात्वत्कृतान्तेन प्रणयोऽर्थेषु मे कृतः।
किमिदानीं नृशंसेन चारित्रमपि द्वषितम्॥

(घ) धन्यानि तेषां खलु जीवितानि
ये कामिनीनां गृहमागतानाम्।
अर्द्राणि मेघे कशीतलानि
गात्रणि गोत्रेषु परिष्वजन्ति॥

खण्ड—ख

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

$2 \times 10 = 20$

(i) मुक्तक का लक्षण देते हुए उसकी विशेषता बताए।

(ii) नाटक में विष्कंभक का प्रयोग क्यों किया जाता है ? स्पष्ट कीजिए।

(iii) 'बुद्धचरित' महाकाव्य के शैलीगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

(iv) 'मेघदूत' के प्रतिपाद्य विषय पर विस्तारपूर्वक लिखिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए–

$2 \times 5 = 10$

(क) रसाभास एवं भावाभास

(ख) नायक के भेद

(ग) रूपक

(घ) अर्थप्रकृति

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** का चरित्र-चित्रण कीजिए–

$2 \times 5 = 10$

(क) यज्ञिणी

(ख) चारुदत्त

(ग) वसन्तसेना

(घ) मेघ